भाषा और साक्षरता

विद्यालय और घर में होनेवाले संवाद

भारत में विद्यालय आधारित समर्थन के माध्यम से शिक्षक शिक्षा

www.TESS-India.edu.in

http://creativecommons.org/licenses/

संदेश

शिक्षकों को बाल केंन्द्रित कक्षा अभ्यास की ओर उन्मुख करने तथा शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्देश्यों को सम्मुख रखते हुए TESS-India राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत है। इस दिशा में TESS-India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources) का विकास किया गया है । ये संसाधन शिक्षकों तथा शिक्षक–प्रशिक्षकों के वृत्ति विकास (Professional development) में लाभकारी एवं उपयोगी सिद्ध होंगे। राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार के नेतृत्व में इन संसाधनों का स्थानीयकृत किया गया है, जिसके अन्तर्गत इनके उद्देश्य के मूल को बरकरार रखते हुए इनमें स्थानीय, भाषा, बोली, प्रथाओं, संस्कृतियों तथा नियमों को सम्मिलित किया गया है। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता एवं सुगमता पूर्वक किया जा सकता है ।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार के मार्गदर्शन में TESS-India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources) नेट पर आप सभी के लिए सुलभ उपलब्ध है ।

शुभकामनाओं सहित ।

(डॉ0 मुरली मनोहर सिंह)
निदेशक
एस0सी0ई0आर0टी0, बिहार

समीक्षा एवं दिशाबोध
डॉ. मुरली मनोहर सिंह, निदेशक राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. सैयद अब्दुल मोईन, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. क़ासिम खुर्शीद, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
डॉ. इम्तियाज़ आलम, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. स्नेहाशीष दास राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. अर्चना, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. रीता राय, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
श्री तेज नारायण प्रसाद, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

स्थानीयकरण
भाषा और शिक्षा
डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एडुकेशन एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर, वैशाली
श्री सुमन सिंह, प्रखंड साधनसेवी, भगवानपुर हाट, सिवान
श्री कात्यायान कुमार त्रिपाठी, प्राथमिक विद्यालय चैलीटाल, पटना
श्री कृत प्रसाद, प्रखंड साधनसेवी, हिलसा, नालंदा
प्राथमिक अंग्रेज़ी
श्री अरशद रज़ा, सहायक शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय, पचासा रहुई, नालंदा
श्री संतोष सुमन, सहायक शिक्षक, बालिका उच्च विद्यालय, महुआबाग
श्री शशि भूषण पाण्डेय, सहायक शिक्षक, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, मुकुन्दपुर, नालंदा
श्रीमती रचना त्रिवेदी, शिक्षिका, नोट्रेडेम अकादमी, पटना
माध्यमिक अंग्रेज़ी
श्री मणिशंकर, प्रधानाध्यापक, तारामणी भगवानसाव उच्च माध्यमिक विद्यालय, कोइलवर, भोजपुर
डॉ. ब्रजेश कुमार, शिक्षक, पी. एन. एंग्लो संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, नया टोला, पटना
प्राथमिक गणित
श्री कृष्ण कान्त ठाकुर
श्री दिलीप कुमार, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, बुलनी हैदरपुर, नालंदा
श्री गोविन्द प्रसाद, प्रखंड साधनसेवी, चनपटिया, पश्चिमी चम्पारण
माध्यमिक गणित
डॉ. राकेश कुमार, भागलपुर डायट
श्री रिज़वान रिज़वी, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, सिलौटा चाँद, कैमूर
श्री इन्द्रभूषण कुमार, शिक्षक, सहयोगी माध्यमिक विद्यालय, हाजीपुर, वैशाली
प्राथमिक विज्ञान
श्री मनोज त्रिपाठी, प्रखंड साधनसेवी, बरहारा, भोजपुर
श्री शशिकान्त शर्मा, प्रखंड साधनसेवी, आरा, भोजपुर
श्री रणबीर सिंह, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, आदर्श आवासीय मध्य विद्यालय शिक्षक संघ, सहरसा
माध्यमिक विज्ञान
श्री जी.वी.एस.आर प्रसाद
श्री मुकुल कुमार, शिक्षक, सहायक शिक्षक, गोरखनाथ सूर्यदेव माध्यमिक विद्यालय, राजापाकर वैशाली

TESS-India (Teacher Education Through School Based Support) का लक्ष्य है भारत में मुक्त शैक्षिक संसाधनों के द्वारा प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर शिक्षकों के कक्षा अभ्यासों को बेहतर करना। ये संसाधन शिक्षकों के छात्र–केन्द्रित, भागीदारी दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायता करेंगे।

TESS-India के मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Education Resources – OERs) शिक्षकों को स्कूल की पाठ्यपुस्तक के लिए सहायक पुस्तिका प्रदान करते हैं। ये संसाधन शिक्षकों के लिए गतिविधियाँ प्रदान करते हैं जो वे कक्षा में अपने छात्र–छात्राओं के साथ कर सकते हैं। साथ ही इनमें केस स्टडी भी हैं जो ये दर्शाते हैं कि किस प्रकार दूसरे शिक्षकों ने उस विषय को सिखाया है। संबंधित संसाधन शिक्षकों को पाठ योजना बनाने में और विषय पर ज्ञान वर्धन करने में उनकी सहायता करते हैं।

TESS-India के मुक्त शैक्षिक संसाधन भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल हैं। ये *भारतीय तथा अतंर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार* किये गये हैं *और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट उपयोग के लिए उपलब्ध है (http://www.tess-india.edu.in)।* मुक्त शैक्षिक संसाधन अनेकों संस्करणों में उपलब्ध हैं जो प्रत्येक राज्य के लिए उपयुक्त है जहाँ TESS India कार्यरत है। उपयोगकर्ता इन संसाधनों को अनुकूल और स्थानीयकृत करने के लिए स्वतंत्र हैं ताकि ये स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भों को पूरा कर सकें।

TESS-India मुक्त विश्वविद्यालय, ब्रिटेन के नेतृत्व में तथा ब्रिटेन की सरकार द्वारा वित्त-पोषित है।

वीडियो संसाधन

इस इकाई की कुछ गतिविधियों के साथ निम्न प्रतीक का उपयोग किया गया है: *. इससे संकेत मिलता है कि निर्दिष्ट अध्यापन संबंधी थीम के लिए TESS-India वीडियो संसाधनों को देखना आपके लिए उपयोगी होगा।*

TESS-India वीडियो संसाधन भारत में अनेक प्रकार की कक्षाओं के संदर्भ में मुख्य अध्यापन तकनीकों का वर्णन करते हैं। हमें आशा है कि वे आपको इसी प्रकार के अभ्यासों के साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित करेंगे। उनका उद्देश्य पाठ (टेक्स्ट) पर आधारित इकाइयों के माध्यम से काम करने के आपके अनुभव का पूरक होना और उसे बढ़ाना है।

TESS-India वीडियो संसाधनों को ऑनलाइन देखा या TESS-India की वेबसाइट, http://www.tess-india.edu.in/ से डाउनलोड किया जा सकता है। वैकल्पिक रूप से, आप ये वीडियो सीडी या मेमोरी कार्ड के माध्यम से भी देख सकते हैं।

संस्करण 2.0 LL01v1
Bihar

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन- शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है.
http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

बच्चे विद्यालय की शुरुआत अपने घर में और सुमदाय में दूसरों के साथ संपर्क के द्वारा प्राप्त विचारों, भाषाओं, ज्ञान, कौशलों और अवधारणाओं के साथ करते हैं। जब हम उनके सतत् विकास के लिए मुख्य संसाधनों के रूप में उनकी भाषाई और सांस्कृतिक क्षमताओं को महत्व देते हैं, तो विद्यालय में उनकी औपचारिक शिक्षा और भी ज्यादा प्रभावी हो जाएगी।

इस इकाई में आप अपने भाषा और साक्षरता अध्यापन में अपने छात्र–छात्राओं के घर और समुदाय के अनुभवों के महत्व और उनके उपयोग के तरीकों को जानेंगे।

आप इस इकाई में सीख सकते हैं

- अपने छात्र–छात्राओं के बारे में ज्यादा जानने के मौके अपनी कक्षा की समय सारिणी में किस तरह शामिल करें।
- भाषा की सीखने की योजना कैसे बनाएँ, जिनमें आपके छात्र–छात्राओं के विद्यालय-से-बाहर के अनुभवों का उपयोग हो सके।

यह दृष्टिकोण क्यों महत्वपूर्ण है

छात्र–छात्रा अपना अधिकांश समय घर में और समुदाय में अनौपचारिक रूप से सीखने में लगाते हैं। हालांकि, पाठ्यपुस्तक को ही निर्देशों का मुख्य स्त्रोत मानने की प्रवृत्ति का अर्थ यह है कि छात्र–छात्रा जिस कौशल, ज्ञान और अनुभवों के साथ कक्षा में आते हैं, शिक्षक उन्हें अनदेखा कर सकते हैं।

छोटे बच्चे जब पहली बार विद्यालय आते हैं, तो अपरिचित लोगों, दिनचर्या और भाषा से उनका सामना होता है, उससे वे अचंभित हो सकते हैं। अपने छात्र–छात्राओं के विभिन्न सांस्कृतिक अभ्यासों और भाषाओं की विविधता को महत्व देकर, आप उन्हें इस नए माहौल में ज्यादा सुरक्षित महसूस करा सकते हैं।

बच्चों को हर दिन घर-आधारित शिक्षा और विद्यालय-आधारित शिक्षा के बीच एक पुल पार करना पड़ता है। इस परिवर्तन को सरल बनाने के लिए इस इकाई में कुछ गतिविधि सुझाए दिए गए हैं, जिनसे शिक्षक/शिक्षिकाओं और छात्र–छात्राओं दोनों को समान रूप से लाभ होगा।

1 विद्यालय से बाहर छात्र–छात्राओं की शिक्षा

ज़रा सोचिए

- आप किन कौशलों और ज्ञान के बारे में सोच सकते हैं, जो आपके छात्र–छात्राओं ने विद्यालय से बाहर सीखे हैं?
- क्या आपको लगता है कि आपके छात्र–छात्राओं के घर या समुदाय की भाषा और सांस्कृतिक ज्ञान उनकी विद्यालयी शिक्षा में उपयोगी है? क्यों या क्यों नहीं?

केस स्टडी 1 में, एक शिक्षिका एक प्री-स्कूल छात्र–छात्रा के सीखने के अनुभवों के बारे में जानकारी लेती हैं।

केस स्टडी 1: श्रीमती करूणा एक प्री-स्कूल छात्र–छात्रा के ज्ञान और कौशल के बारे में बताती हैं

बिहार की एक प्राथमिक शिक्षिका श्रीमती करूणा ने उनकी कक्षा दो के छात्र–छात्राओं में से एक के अभिभावक की दुकान से एक कटोरा खरीदने के उनके अनुभव का वर्णन किया है। वहाँ उनकी मुलाक़ात उनके छात्र–छात्रा की चार-वर्षीय बहन शिल्पी से हुई, जिसने अभी विद्यालय जाना शुरू नहीं किया है।

शिल्पी फर्श पर कार्डबोर्ड के एक बक्से के बगल में बैठी हुई थी। वह पैकेट निकालकर उन्हें गिन रही थी और उनके ढेर बना रही थी। उसके पिताजी एक ग्राहक से बात कर रहे थे। मैंने शिल्पी से पूछा, 'क्या तुम बाउल बेचती हो?' उसने अपनी माँ

को बुलाया, जो कि दुकान के पीछे की तरफ से आईं। एक कोने की तरफ इशारा करते हुए, उसकी माँ ने बच्ची की घर की भाषा में उत्तर दिया, लेकिन 'बाउल' के लिए उन्होंने हिन्दी शब्द का उपयोग किया। शिल्पी मुझे वहाँ ले गई, जहाँ बाउल रखे हुए थे और उसने उनमें से दो-तीन उठाकर मुझे दिखाया कि कौन–कौन से अलग अलग रंग उपलब्ध हैं। मैंने लाल वाला चुना, जिसे लेकर वह काउंटर पर गई। इसके बाद उसने मुझसे पैसे लेकर अपनी माँ को दिए, जिन्होंने मुझे देने के लिए उसे सही रकम लौटाई। शिल्पी ने उस बाउल को कागज़ में लपेटने में अपनी माँ की मदद की और फिर बैग में रखने के लिए वह मुझे दिया। अंत में, उसने अपनी माँ के साथ मुझे धन्यवाद दिया और हिन्दी में गुडबाय कहा।

जब मैं दुकान से निकल रही थी, तब मैंने इस बारे में सोचा कि शिल्पी क्या–क्या ज्ञान और कौशल सीख रही है, जिससे उसे विद्यालय जाना शुरू करने के बाद फायदा होगा।

(केनर, 2000 से लिया गया)

ज़रा सोचिए

- शिल्पी भाषा और संवाद के बारे में क्या जानती है?
- इस केस स्टडी में शिल्पी ने और कौन-से कौशलों का प्रदर्शन किया?

दूसरों के विचारों के साथ अपने विचारों की तुलना करें।

शिल्पी हिसाब लगाना सीख रही है। वह गिन सकती है और वह सीख रही है कि किस तरह वर्गीकरण और छँटाई (sorting) की जाती है। वह पैसों और रेजगारी के बारे में समझने लगी। वह जानती है कि दुकान में किस तरह काम होता है। वह सुन सकती है, सवाल को समझ सकती है और जानकारी ले सकती है। वह ये भी जानती है कि किसी ग्राहक के साथ किस तरह विनम्रता से बात करनी चाहिए।

शिल्पी अपने घर की भाषा में आत्मविश्वास के साथ बात करती है। वह रंगों के नाम जानती है, प्रश्नों की भाषा, निर्देशों और दिशाओं को समझती है। वह थोड़ी-बहुत हिन्दी में समझ लेती है, जिसका उपयोग वह धन्यवाद और नमस्ते कहने में करती है। वह इस बात को समझने लगी है कि लोग अलग अलग भाषाओं में संवाद कर सकते हैं।

अवलोकन, लोगों से मिलने–जुलने से तथा देखकर, शिल्पी महत्वपूर्ण सामान्य ज्ञान और संवाद कौशल प्राप्त कर रही है। जब वह विद्यालय जाने लगेगी, तो ये उसकी आगे की शिक्षा और भाषा के विकास का एक मज़बूत आधार बनेंगे।

छात्र–छात्रा जब विद्यालय जाते हैं, तो विद्यालय के साथ–साथ तथा अपने और समुदाय से भी मूल्यवान ज्ञान और कौशल प्राप्त करते हैं। आपके छात्र–छात्रा उनके छोटे भाई-बहनों की देखभाल करने में मदद कर सकते हैं, अपने दादा-दादी का ख्याल रख सकते हैं, परिवार के पालतू जानवरों का ध्यान रख सकते हैं, दुकान में सामान की बिक्री में अपने अभिभावक की मदद कर सकते हैं, रसोई में हाथ बंटा सकते हैं, किसी विशिष्ट कला में महारात हासिल कर सकते हैं या कोई खेल खेलना पसंद कर सकते हैं। ऐसी गतिविधियों से उन्हें उनकी भाषा और साक्षरता के विकास के लिए अनौपचारिक शिक्षण अवसर मिलते हैं, जो उनके विद्यालय के माहौल के भीतर बनाए जा सकते हैं।

2 कक्षा में बातचीत

अपने छात्र–छात्राओं को उनके शौक, गतिविधियों और प्रतिबद्धताओं के बारे में बात करने के मौके देने से उन्हें आपकी कक्षा में अच्छी तरह बातचीत करने का प्रोत्साहन मिलेगा। इससे आप भी अपने छात्र–छात्राओं के बोलने और सुनने के कौशल का आकलन कर सकेंगे। यह खासतौर पर उन मामलों में उपयोगी होता है, जहाँ छात्र–छात्राओं की घर की भाषा विद्यालय की भाषा से अलग है।

निम्नलिखित क्रियात्मक गतिविधियाँ इसकी शुरुआत करने में आपकी मदद के लिए बनाई गई हैं।

गतिविधि 1: दैनिक बातचीत

अगली विद्यालय अवधि तक, रोज़ की एक दिनचर्या बनाएं, जिसमें आप अपने छात्र–छात्राओं के साथ अकेले-अकेले या समूह में संक्षिप्त अनौपचारिक बातचीत करें। यह दिन की शुरुआत या अंत में, अथवा मध्याह्न्तर के दौरान हो सकता है। सुनिश्चित करें कि बारी-बारी से आप अपने सभी छात्र–छात्राओं से बात करें। इसकी निगरानी करने के लिए आप एक सामान्य चेक लिस्ट रख सकते हैं।

उदाहरण के लिए आप उनसे पूछ सकते हैं कि क्या उन्हें हाल ही में हुए त्यौहार में मज़ा आया। क्या उन्हें किसी विशिष्ट क्रिकेट मैच की जानकारी हैं। आपके छात्र–छात्रा विद्यालय से बाहर क्या सीखते हैं और पाठ में वे किस बात पर ध्यान दे रहे हैं, इन दोनों को आपस में जोड़ने के मौके ढूंढें। आप कह सकते हैं कि:

> 'मुझे मालूम है कि आप में से कई लोगों ने इतने खराब मौसम के बावजूद, इस महीने बाज़ार में अपने माता-पिता की मदद की। बहुत बढ़िया! आज गणित के पाठ में, आप लोग अपना कौशल दिखा सकते हैं, क्योंकि हम धन को जोड़ने और घटाने का अभ्यास करने वाले हैं। आप में से कितने लोगों ने बाज़ार में रेजगारी दी थी? क्या आपने अपने हिसाब की जाँच अपनी माँ या पिताजी से करवाई थी?'

आपके छात्र–छात्राओं के उत्तरों से आपको इस बारे में ज्यादा जानकारी मिलेगी कि वे विद्यालय में अपनी शिक्षा के लिए किस ज्ञान और कौशल के साथ आते हैं। नोट करें कि आपको अपने छात्र–छात्राओं के बारे में क्या जानकारी मिलती है और उनकी कौन-सी रुचियाँ व गतिविधियाँ दूसरों के साथ साझा की गयी।

पूरे सत्र के दौरान ऐसा करते समय, अपनी पाठ्यपुस्तक, अपने पाठ्यक्रम और अपनी अध्यापन योजना पर निगाह डालें, और देखें कि क्या इस बात की कोई संभावना है कि आगे आने वाले विषयों को आपके छात्र–छात्राओं के मौजूदा ज्ञान या रुचि के साथ जोड़ा जा सके।

सीखने और सुनने की इस गतिविधि को आगे बढ़ाने के लिए, अपने छात्र–छात्राओं से एक साप्ताहिक 'डायरी' में यह लिखने को कहें कि जब वे विद्यालय में नहीं होते हैं, तो वे क्या करते हैं।

अपनी कक्षा के सभी छात्र–छात्राओं को शामिल करने के बारे में अधिक जानकारी के लिए संसाधन 1 पढ़ें।

वीडियो: सभी को शामिल करना

गतिविधि 2: कक्षा की चर्चा

विद्यालय के बाहर छात्र–छात्राओं की रुचियों और प्रतिबद्धताओं के बारे में वर्गकक्ष में चर्चा की योजना बनाएं। शुरूआत में संकेत के रूप में एक केंद्रित प्रश्न का उपयोग करें। यहाँ कुछ विचार दिए गए हैं, लेकिन आपको अपने सन्दर्भ के आधार पर प्रश्न चुनने होंगे:

- अपने घर में हाथ बंटाने के लिए आप किस तरह के काम करते हैं? आपको क्या करना सबसे ज्यादा पसंद है? आपको क्या करना सबसे कम पसंदहै?
- आपकी साप्ताहिक छुट्टी का सबसे बढ़िया हिस्सा कौन-सा था? आपको किस काम में ज्यादा मज़ा नहीं आया?
- विद्यालय की छुट्टी के दौरान आप क्या करेंगे?

प्रश्न को ब्लैकबोर्ड पर लिखें। सबसे पहले स्वयं इसका जवाब दें।

इसके बाद दो या तीन छात्र–छात्राओं से प्रश्न पूछें। फॉलो-अप प्रश्न और संकेतों के द्वारा बातचीत को आगे बढ़ाएं, जैसे 'सचमुच? आपने यह कहाँ सीखा?', 'आप इसके बाद क्या करेंगे?' इत्यादि।

अपने छात्र–छात्राओं को छोटे समूहों में व्यवस्थित करें और उन्हें ब्लैकबोर्ड पर लिखे प्रश्न पर आपस में चर्चा करने को कहें। उन्हें एक-दूसरे से फॉलो-अप प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करें। जब वे बातचीत कर रहे हों, तो कक्षा में घूमें और समूहों की निगरानी करके यह सुनिश्चित करें कि हर कोई इसमें भाग ले रहा है।

छोटे समूहों की चर्चा के विकल्प के रूप में, आप अपने छात्र–छात्राओं से यह भी कह सकते हैं कि वे जोड़ियों में एक-दूसरे से सवाल जवाब करें और उनके साथी ने उन्हें जो बताया है, उसे संक्षिप्त टिप्पणियों के रूप में लिखें।

3 कक्षा का प्रोजेक्ट

अगले केस स्टडी में, एक शिक्षिका छात्र–छात्राओं के बारे में अपनी जानकारी का उपयोग एक विस्तारित भाषा और साक्षरता परियोजना की योजना बनाने में करती हैं।

केस स्टडी 1: त्यौहारों के बारे में सुश्री सुनीता की भाषा और साक्षरता परियोजना

कक्षा पाँच की शिक्षिका सुश्री सुनीता को त्यौहारों के बारे में पाठ्यपुस्तक के एक पाठ से प्रेरणा मिली।

मेरे छात्र–छात्राओं ने हाल ही में ईद और होली जैसे भारत के मुख्य त्यौहारों का वर्णन करने वाला एक पाठ पाठ्यपुस्तक में पढ़ा था। हमारे समुदाय में कई रोचक त्यौहार हैं, इसलिए मैंने हमारे स्थानीय त्यौहारों पर ध्यान केंद्रित करने का फैसला किया, जिनमें से कई त्यौहार जल्दी ही आने वाले थे।

सबसे पहले मैंने अपने छात्र–छात्राओं से पूछा कि वे कौन-से त्यौहार मनाते हैं और उनके उत्तर मैंने ब्लैकबोर्ड पर लिखे।

इसके बाद मैंने अपने छात्र–छात्राओं को समूहों में व्यवस्थित किया, जिनमें से हर समूह एक त्यौहार का प्रतिनिधित्व कर रहा था। मैंने प्रत्येक समूह को कागज़ का एक बड़ा टुकड़ा देकर समझाया कि उन्हें इस पर अपने त्यौहार के बारे जितनी ज्यादा बातें वे लिख सकते हैं, लिखनी हैं: त्यौहार क्यों मनाया जाता है, किन देवताओं की पूजा की जाती है, कौन-से समुदाय इसे मनाते हैं, इसमें क्या-क्या किया जाता है, कौन-से पकवान बनाए जाते हैं, क्या इसमें कोई विशेष पोशाक पहनी जाती है और कौन-सी गतिविधियाँ होती हैं। मैंने उन्हें बताया कि यदि वे चाहें, तो वे चर्चा के लिए और अपनी टिप्पणियों के लिए अपने घर की भाषा का उपयोग कर सकते हैं।

इसके बाद मैंने प्रत्येक समूह से कहा कि वे पूरी कक्षा के सामने अपने विचार प्रस्तुत करें। मैंने समूहों को संकेत देने के लिए उनसे कुछ प्रश्न पूछे, जैसे 'यह दिन में किस समय किया जाता है? आप मंदिर कब जाते हैं, आप क्या पहनते हैं? क्या

आपके दादा-दादी भी यह त्यौहार मनाते हैं?' आदि।

इसके बाद मैंने उन्हें समझाया कि हर समूह को अपने त्यौहार के बारे में बताने वाला एक पोस्टर बनाना है। होमवर्क के लिए, मैंने अपने छात्र–छात्राओं से कहा कि वे उस त्यौहार के बारे में अपने माता-पिता, दादा-दादी और घर में या समुदाय में अन्य लोगों से और जानकारी लें। मैंने उन्हे नमूने के तौर पर कुछ प्रश्न दिए, 'क्या यह त्यौहार यहाँ हमेशा से मनाया जाता रहा है? क्या यह हमेशा इतने बड़े पैमाने पर होता था? क्या हर त्योहार में बनजे वाली संगीत अलग होती है?' मैंने अपने छात्र–छात्राओं को उनके पोस्टर के साथ काम करने के लिए एक सप्ताह तक प्रतिदिन एक पाठ आवंटित किया। मैंने हर समूह के पास जाकर उनकी बातें सुनीं, उनका अवलोकन किया और आवश्यकता पड़ने पर उनकी मदद की।

मैंने उन्हें समझाया कि वे पोस्टर पर विद्यालय की भाषा में, उनके घर की भाषा में, या दोनों भाषाओं को मिलाकर लिख सकते हैं। पहली बार उनमें से कुछ लोगों ने कक्षा में अपने घर की भाषा में कुछ लिखा था। ऐसा करते हुए वे बहुत रोमांचित थे।

जब उनका काम ख़त्म हो गया, तो प्रत्येक समूह ने अपने पोस्टर शेष कक्षा के सामने प्रस्तुत किया। मैंने और अन्य छात्र–छात्राओं ने उनसे सवाल पूछे। हम सभी ने बहुत कुछ सीखा। इसके बाद मैंने वे रंगीन पोस्टर दीवार पर लगा दिया, ताकि सभी उन्हें पढ़ें और आनन्द उठा सकें।

ज़रा सोचिए

- इस परियोजना में अपने छात्र–छात्राओं का आकलन करने के लिए सुश्री सुनीता के पास क्या मौके थे?
- आप छोटे छात्र–छात्राओं के लिए इस परियोजना में किस तरह के बदलाव करेंगे?
- बड़ी उम्र के छात्र–छात्राओं के लिए, इस परियोजना का विस्तार किस तरह किया जा सकता है?

गतिविधियों के इस क्रम के द्वारा छात्र–छात्राओं को अपने भाषा और साक्षरता कौशल को विकसित करने के कई अवसर मिले। इसमें शामिल थे:

- पूरी कक्षा और छोटे समूहों में चर्चा
- उनका अपने परिवारों और समुदाय के सदस्यों के साथ बातचीत
- टिप्पणी लिखना
- लिखना
- मौखिक प्रस्तुतिकरण
- ध्यान से सुनना
- प्रश्न पूछना

पूरे समय, उन्हें विद्यालय की और अपने घर की भाषा के उपयोग का प्रोत्साहन दिया गया।

परियोजना के मूल में छात्र–छात्राओं का स्थानीय ज्ञान था। शिक्षिका के पास प्रत्येक छात्र–छात्रा और प्रत्येक समूह की निगरानी का समय था। वह छात्र–छात्राओं के कौशल और सहभागिता के बारे में नोट और एक चेक लिस्ट बना सकी।

छोटे छात्र–छात्राओं के लिए, इस तरह की किसी परियोजना में बोलने और सुनने पर ज्यादा जोर दिया जाना चाहिए। छोटी उम्र वाले छात्र–छात्रा किसी त्यौहार से जुड़े चित्र भी बना सकते हैं या उस त्यौहार के पहलुओं पर आधारित नाटक तैयार कर सकते हैं। बड़ी उम्र वाले छात्र–छात्राओं के लिए, एक लिखित परियोजना अधिक उपयुक्त रहेगी, जिसमें शोध और विशेषीकृत शब्दावली तथा त्यौहारों के बारे जानकारी शामिल हो, और जो भाषा, इतिहास और पारंपरिक संस्कृति पर आधारित हो।

मुख्य संसाधन 'सीखने के लिए बोलें' में छात्र–छात्राओं के बीच सहयोगात्मक कार्य के महत्व के बारे में अधिक विचार शामिल हैं।

वीडियो: सीखने के लिए बातचीत

4 सारांश

इस इकाई में आपके छात्र–छात्राओं के घर और समुदाय-आधारित अनुभवों का विद्यालय में उनके भाषा और साक्षरता कौशल के विकास में उपयोग के महत्व और मूल्य का वर्णन किया गया है। यदि आपके छात्र–छात्राओं का ध्यान इस बात पर जाए कि वे विद्यालय से बाहर जो काम करते हैं और जिस भाषा का उपयोग करते हैं, उसे उनके शिक्षकों/शिक्षिकाओं द्वारा महत्व दिया जाता है, तो इससे वे विद्यालय में सीखने के प्रति अधिक आत्मविश्वासी और प्रेरित महसूस करेंगे। आप अपने छात्र–छात्राओं से विद्यालय के बाहर की उनकी रुचियों के बारे में नियमित रूप से बातचीत और चर्चा करके यह दर्शा सकते हैं कि आप उनके अनुभवों को महत्व देते हैं।

इस इकाई में ऐसे कई तरीकों को रेखांकित किया गया है, जिनके द्वारा आप पाठ्यपुस्तक के अध्यायों को अपने छात्र–छात्राओं के, और उनके परिवार व समुदाय के सदस्यों के ज्ञान के साथ जोड़कर उनके लिए अधिक सार्थक और प्रासंगिक बना सकते हैं। आप इन गतिविधियों को पाठ्यपुस्तक के किसी भी विषय और किसी भी स्तर के छात्र–छात्राओं के अनुसार अनुकूलित कर सकते हैं।

संसाधन

संसाधन 1: सभी को शामिल करना

'सबको शामिल करें' का क्या अर्थ है?

संस्कृति और समाज की विविधता कक्षा में प्रतिबिंबित होती है। छात्र–छात्राओं की भाषाएं, रुचियां और क्षमतायें अलग-अलग होती हैं। छात्र–छात्रा विभिन्न सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमियों से आते हैं। हम इन भिन्नताओं को नज़रअंदाज नहीं कर सकते; वास्तव में, हमें उनका सम्मान करना चाहिए, क्योंकि वे एक दूसरे और हमारे अपने अनुभव से परे दुनिया के बारे में अधिक जानने का जरिया बन सकते हैं। सभी छात्र–छात्राओं को शिक्षा पाने और सीखने का अधिकार है चाहे उनकी स्थिति, क्षमता और पृष्ठभूमि कुछ भी हो, और इसे भारतीय कानून और अंतरराष्ट्रीय बाल अधिकारों में मान्यता दी गई है। 2014 में राष्ट्र को अपने पहले संदेश में, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जाति, लिंग या आय पर ध्यान दिए बिना भारत के सभी नागरिकों का सम्मान करने के महत्व पर जोर दिया। इस संबंध में विद्यालयों और शिक्षक/शिक्षिकाओं की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है।

हम सभी के दूसरों के बारे में पूर्वाग्रह और दृष्टिकोण होते हैं जिन्हें हो सकता है हमने नहीं पहचाना है या ध्यान नहीं दिया। एक शिक्षक/शिक्षिका के रूप में, आप में हर छात्र–छात्रा की शिक्षा के अनुभव को सकारात्मक या नकारात्मक ढंग से प्रभावित करने की शक्ति है। चाहे जानबूझ कर या अनजाने में, आपके अंतर्निहित पूर्वाग्रह और दृष्टिकोण इस बात को प्रभावित करेंगे कि आपके छात्र–छात्रा कितने समान रूप से सीखते हैं। आप अपने छात्र–छात्राओं के साथ असमान बर्ताव से बचने के लिए कदम उठा सकते हैं।

शिक्षा में सबको शामिल करना सुनिश्चित करने के तीन मुख्य सिद्धांत

- **देखना:** प्रभावी शिक्षक/शिक्षिका चौकस, सचेतन और संवेदनशील होते हैं; वे अपने छात्र–छात्राओं के परिवर्तनों से वाकिफ रहते हैं। यदि आप चौकस हैं, तो आप देखेंगे कि किसी छात्र–छात्रा ने कब कोई चीज अच्छी तरह से की है, उसे कब मदद की जरूरत है और वह कैसे दूसरों से संबद्ध होता है। आप अपने छात्र–छात्राओं के परिवर्तनों को भी

समझ सकते हैं, जो उनके घर की परिस्थितियों या अन्य समस्याओं में परिवर्तनों से प्रतिबिंबित हैं। सबको साथ लेकर चलने के लिए आवश्यक है कि आप अपने छात्र–छात्राओं पर प्रतिदिन ध्यान दें। और उन छात्र–छात्राओं पर विशेष ध्यान दें जो खुद को अलग–थलग महसूस कर सकते हैं या सहभागिता में सक्षम नहीं हैं।

- **आत्म-सम्मान पर संकेंद्रण:** अच्छे नागरिक वे होते हैं जो सबके साथ सहज रहते हैं। उनमें आत्म-सम्मान होता है। वे अपनी ताकत और कमज़ोरियों को जानते हैं, और उनमें पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना अन्य लोगों के साथ सकारात्मक संबंध बनाने की क्षमता होती है। वे खुद का और दूसरों का भी सम्मान करते हैं। एक शिक्षक/शिक्षिका के रूप में, आप किसी युवा व्यक्ति के आत्म-सम्मान पर उल्लेखनीय प्रभाव डाल सकते हैं; उस शक्ति को जानें और उसका उपयोग हर छात्र–छात्रा के आत्म-सम्मान को बढ़ाने के लिए करें।
- **लचीलापन:** यदि आपकी कक्षा में कोई चीज विशिष्ट छात्र–छात्राओं, समूहों या किसी एक के लिए उपयोगी नहीं है, तो अपनी योजनाओं को बदलने या गतिविधि को रोकने के लिए तैयार रहें। लचीला होना आपको समायोजन करने में सक्षम करेगा ताकि आप सभी छात्र–छात्राओं को अधिक प्रभावी ढंग से शामिल करें।

वे दृष्टिकोण जिनका उपयोग आप हर समय कर सकते हैं

- **अच्छे व्यवहार का मॉडल बनना:** जातीय समूह, धर्म या लिंग की परवाह किए बिना, अपने छात्र–छात्राओं के साथ अच्छा बर्ताव करके उनके लिए एक उदाहरण बनें। सभी छात्र–छात्राओं से सम्मान के साथ व्यवहार करें और अपने अध्यापन के माध्यम से स्पष्ट कर दें कि आपके लिए सभी छात्र–छात्रा बराबर हैं।
  उन सबके साथ सम्मान के साथ बात करें, जहाँ उपयुक्त हो उनकी राय को ध्यान में रखें और कक्षा की उन्हें वैसे काम की जिम्मेदारी लेने को प्रोत्साहित करें जिससे सभी को लाभ हो।
- **ऊँची अपेक्षाएं:** योग्यता निश्चत या तय नहीं होती है; यदि समुचित समर्थन मिले तो सभी छात्र–छात्रा सीख और प्रगति कर सकते हैं। यदि किसी छात्र–छात्रा को उस काम को समझने में कठिनाई होती है जो आप कक्षा में कर रहे हैं, तो यह न समझें कि वह कभी भी समझ नहीं सकेगा। शिक्षक/शिक्षिका के रूप में आपकी भूमिका यह सोचना है कि हर छात्र–छात्रा के सीखने में किस सर्वोत्तम ढंग से मदद करें। यदि आपको अपनी कक्षा में हर एक से उच्च अपेक्षाएं हैं, तो आपके छात्र–छात्राओं के यह समझने की अधिक संभावना है कि यदि वे लगे रहे तो वे सीख जाएंगे। उच्च अपेक्षाएं बर्ताव पर भी लागू होनी चाहिए। सुनिश्चित करें कि अपेक्षाएं स्पष्ट हैं और छात्र–छात्रा एक दूसरे के साथ सम्मान के साथ व्यवहार करते हैं।
- **अपने अध्यापन में विविधता लाएं:** छात्र–छात्रा विभिन्न तरीकों से सीखते हैं। कुछ छात्र–छात्रा लिखना पसंद करते हैं; अन्य अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए मस्तिष्क में मानचित्र या चित्र बनाना पसंद करते हैं। कुछ छात्र–छात्रा अच्छे श्रोता होते हैं; कुछ सबसे अच्छा तब सीखते हैं जब उन्हें अपने विचारों के बारे में बात करने का अवसर मिलता है। आप हर समय सभी छात्र–छात्राओं के लिए उपयुक्त नहीं हो सकते, लेकिन आप अपने अध्यापन में विविधता ला सकते हैं और छात्र–छात्राओं को उनके द्वारा की जाने वाली सीखने की कुछ गतिविधियों के विषय में किसी विकल्प की पेशकश कर सकते हैं।
- **शिक्षा को दैनिक जीवन से जोड़ें:** कुछ छात्र–छात्राओं के लिए, आप उन्हें जो कुछ सीखने को कहते हैं, वह उनके दैनिक जीवन के प्रति अप्रासंगिक लगता है। आप इस पर ध्यान देने के लिए यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि जब भी संभव हो, आप शिक्षा को उनके लिए प्रासंगिक सन्दर्भ के साथ जोड़ें, और आप उनके अनुभवों पर आधारित उदाहरणों का उपयोग करें।
- **भाषा का उपयोग:** जिस भाषा का आप उपयोग करते हैं उसके बारे में सावधानी से सोचें। सकारात्मक भाषा और प्रशंसा का उपयोग करें, और छात्र–छात्राओं का तिरस्कार न करें। हमेशा उनके बर्ताव पर टिप्पणी करें, उन पर नहीं। 'आप आज मुझे कष्ट दे रहे हैं' बहुत निजी लगता है और इसे इस तरह बेहतर ढंग से व्यक्त किया जा सकता है, 'मैं आज आपके बर्ताव को कष्टप्रद पा रहा हूँ। क्या आपको किसी कारण से ध्यान देने में कठिनाई हो रही है?' जो काफी अधिक मददगार है।

- **घिसी-पिटी बातों को चुनौती दें:** ऐसे संसाधनों की खोज और उपयोग करें जो लड़कियों को गैर-रूढ़िवादी भूमिकाओं में दर्शाते हैं या अनुकरणीय (Role Models) महिलाओं, जैसे वैज्ञानिकों को विद्यालय में आमंत्रित करें। अपनी स्वयं की लैंगिक रूढ़िवादिता के प्रति सजग रहें; हो सकता है आप जानते हों कि लड़कियाँ खेल खेलती हैं और लड़के ख्याल रखते हैं, लेकिन हम अक्सर इसे भिन्न तरीके से व्यक्त करते हैं, मुख्यतः इसलिए क्योंकि हम समाज में इस तरह से बात करने के आदी होते हैं।
- **एक सुरक्षित, सुगम शिक्षा के वातावरण का सृजन करें:** यह जरूरी है कि सभी छात्र–छात्रा विद्यालय में सुरक्षित और वाँछित महसूस करें। हर एक से परस्पर सम्मानपूर्ण और मित्रवत बर्ताव को प्रोत्साहित करके आप अपने छात्र–छात्रा को वाँछित महसूस कराने की स्थिति में होते हैं। इस बारे में सोचें कि विद्यालय और कक्षा अलग अलग छात्र–छात्राओं को कैसी दिखाई देगी और महसूस होगी। इस बारे में सोचें कि उन्हें कहां बैठने के लिए कहा जाना चाहिए और सुनिश्चित करें कि दृश्य या श्रवण बाधा या शारीरिक अक्षमता वाला कोई भी छात्र–छात्रा ऐसी जगह पर ही बैठे, जहाँ से वह अपना पाठ पढ़ सके और सीख सके। निश्चित करें कि जो छात्र–छात्रा शर्मीले हैं या आसानी से विचलित हो जाते हैं वे ऐसे स्थान पर हों जहाँ आप उन्हें आसानी से शामिल कर सकते हैं।

विशिष्ट अध्यापन दृष्टिकोण

ऐसे कई विशिष्ट दृष्टिकोण हैं जो सभी छात्र–छात्राओं को शामिल करने में आपकी सहायता करेंगे। इनका अन्य प्रमुख संसाधनों में अधिक विस्तार से वर्णन किया गया है, लेकिन एक संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत है:

- **प्रश्न पूछना:** यदि आप छात्र–छात्राओं को अपने हाथ उठाने को आमंत्रित करते हैं, तो वे लोग ही उत्तर देने का प्रयत्न करते हैं। अधिक छात्र–छात्राओं को उत्तरों के बारे में सोचने और प्रश्नों का जवाब देने में शामिल करने के अन्य तरीके हैं। आप प्रश्नों को विशिष्ट लोगों की ओर निर्देशित कर सकते हैं। कक्षा को बताएं कि आप तय करेंगे कि कौन उत्तर देगा, फिर सामने बैठे छात्र–छात्राओं की बजाय कमरे में पीछे और किनारे में बैठे छात्र–छात्राओं से पूछें। छात्र–छात्राओं को 'सोचने का समय' दें और विशिष्ट लोगों से योगदान आमंत्रित करें। आत्मविश्वास का निर्माण करने के लिए जोड़ी या समूहकार्य का उपयोग करें ताकि आप समग्र-कक्षा चर्चाओं में हर एक को शामिल कर सकें।
- **आकलन:** रचनात्मक आकलन के लिए ऐसी तकनीकों की श्रृंखला का विकास करें जो हर छात्र–छात्रा को अच्छी तरह से जानने में आपकी मदद करेंगी। छिपी हुई प्रतिभाओं और कमियों को उजागर करने के लिए आपको सृजनात्मक होना पड़ेगा। कतिपय छात्र–छात्राओं एवं उनकी योग्यताओं के बारे में सामान्यीकृत विचारों के आधार पर सरलता से बनाई जा सकने वाली कुछ धारणाओं के बजाय रचनात्मक मूल्यांकन आपको सटीक जानकारी देगा। तब आप उनकी व्यक्तिगत जरूरतों के प्रति अनुक्रिया करने के लिए अच्छी स्थिति में होंगे।
- **समूहकार्य और जोड़ी में कार्य:** सभी को शामिल करने के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए सावधानी से अपनी कक्षा को समूहों में बाँटने या जोड़ियाँ बनाने के तरीकों के बारे में सोचें और छात्र–छात्राओं को एक दूसरे को महत्व देने के लिए प्रोत्साहित करें। सुनिश्चित करें कि सभी छात्र–छात्राओं को एक दूसरे से सीखने का अवसर मिले और वे जो जानते हैं उसके प्रति आत्मविश्वास का निर्माण हो। कुछ छात्र–छात्राओं में छोटे समूह में अपने विचारों को व्यक्त करने और प्रश्न पूछने का आत्मविश्वास होता है, लेकिन संपूर्ण कक्षा के सम्मुख नहीं।
- **विभेदन:** अलग अलग समूहों के लिए अलग अलग कार्य तय करने से छात्र–छात्राओं को जहाँ वे हैं वहाँ से शुरू करने और आगे बढ़ने में मदद मिलेगी। खुले-सिरे (Open ended) वाले कामों को तय करने से सभी छात्र–छात्राओं को सफल होने का अवसर मिलेगा। छात्र–छात्राओं को इच्छानुसार कार्यों में विकल्प प्रदान करने से उन्हें उस कार्य के प्रति उत्तरदायित्व का अहसास करने और अपने सीखने के लिए जवाबदेही लेने में मदद मिलेगी। व्यक्तिगत शिक्षण आवश्यकताओं को ध्यान में रखना, विशेष रूप से बड़ी कक्षा में, कठिन होता है, लेकिन विविध प्रकार के कामों और गतिविधियों का उपयोग करके ऐसा किया जा सकता है।

संदर्भ/संदर्भग्रंथ सूची

Austin, R. (ed.) (2009) *Letting the Outside In.* London: Trentham Books.

BBC News (2013) 'Is Indian storytelling a dying art?' (online), 23 March. Available from: http://www.bbc.co.uk/news/world-asia-india-21651933 (accessed 16 September 2014).

Bridges, L. (1995) *Creating Your Classroom Community*, Portland, ME: Stenhouse Publishers.

Kenner, C. (2000) *Home Pages: Literacy Links for Bilingual Children*. Stoke-on-Trent: Trentham Books.

Pattanayak, B., Gupta, D. and Singha, S. (undated) 'Local art education for whole child development: a case of Paitkar painting in Amadubi village' (online), supported by UNICEF-Jharkhand, JEPC, JTWRI. Available from: http://www.academia.edu/5937590/Towards_holistic_development_of_children_using_local_art_and_culture_in_Jharkhand_India (accessed 18 November 2014). This resource looks at the holistic development of children using local art and culture.

Webster, L. and Reed, S. (2012) *The Creative Classroom.* London: Collins.

अभिस्वीकृतियाँ

यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/) के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है, जब तक कि अन्यथा निर्धारित न किया गया हो। यह लाइसेंस TESS-India, OU और UKAID लोगो के उपयोग को वर्जित करता है, जिनका उपयोग केवल TESS-India परियोजना के भीतर अपरिवर्तित रूप से किया जा सकता है।

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन शिक्षक प्रशिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों और छात्र–छात्राओं के प्रति आभार प्रकट किया जाता है जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।